Vol 6 Issue 3 Sept 2016 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

ISSN: 2231-5063 Impact Factor :4.6052(UIF) Volume - 6 | Issue - 3 | September - 2016

GRT Golden Research Thoughts

माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में राष्ट्रीय चेतना

प्रा. डॉ. ज्ञानेश्वर गंगाधर गाडे
हिंदी विभाग प्रमुख, श्री योगानंद स्वामी कला महाविद्यालय, बसमत जि. हिंगोली.

पार्श्वभूमि :

साहित्य में 'राष्ट्र' नाम की उपलब्धि वर्तमान की न होकर प्राचीन हैं। विश्व के अत्यंत प्राचीन ग्रंथ 'ऋग्वेद' में भी 'राष्ट्र' नामक शब्द के अवशेष प्राप्त होते हैं। प्राचीन काल में भारत भूमि पर छोटे–छोटे राजाओं की सल्तनत होने के कारण वे अपने साम्राज्य को ही 'राष्ट्र' समझते थे। यह राष्ट्रीयता की संकुचित प्रवृत्ति तत्कालीन लोगों में थी। पृथ्वीराज चौहान, जयचंद राठोड, हर्षवर्धन, चुद्रगुप्त मौर्य आदि सभी वीर पुरूष अपने ही साम्राज्य को स्वयं का 'राष्ट्र' समझते थे। एखाद विशिष्ट भूप्रदेश को राष्ट्र बनाने या कहने के लिए विभिन्न घटकों को अंतर्भूत किया जाता हैं। राष्ट्र के लिए भूमि, जनता, संस्कृति, जाति–धर्म, भाषा आदि का राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान माना जाता हैं। परंतु इन तत्वों का केवल समुच्चय राष्ट्र नहीं होता, उनका सम्मिलित, समन्वित स्वरूप राष्ट्र की छवि को बनाता है, सँवारता हैं। इन घटक तत्वों में आपसी मेल तथा परस्पर सहयोग चाहिए। राष्ट्र का संबंध एकात्मता की भावना से हैं। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीयता की संकल्पना में जिन सहाय्यक तत्वों का समावेश मिलता है उनमें देश की स्वतंत्रता की अभिलाषा और उसके लिए आवश्यक बलिदान, समर्थन, त्याग की भावना अपने राष्ट्र की संपन्नता की कामना, एकता और अखंडता की भावना और अंत में विश्वबंधुता की विशाल मनोकामना आदि महत्वपूर्ण माने जाते है। माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में उन सभी तत्वों का अंतर्भाव है जिससे उनका काव्य राष्ट्रीय चेतना का काव्य हमारे सामने प्रस्तुत होता है।

राष्ट्रीय चेतना का स्वरूप :

मानव में राष्ट्रीयता की भावना प्राचीन काल से दिखाई देती है। 'अथर्ववेद' में इसके अवशेष मिलते है, "सानो भूमि स्त्विषि बलं राष्ट्रे दधात्तृत्तमें"[1] कहा गया है। शतपथ ब्राम्हण ग्रंथ में भी कहा गया है कि, "राजानो वै राष्ट्रभृतस्ते हि राष्ट्राणि

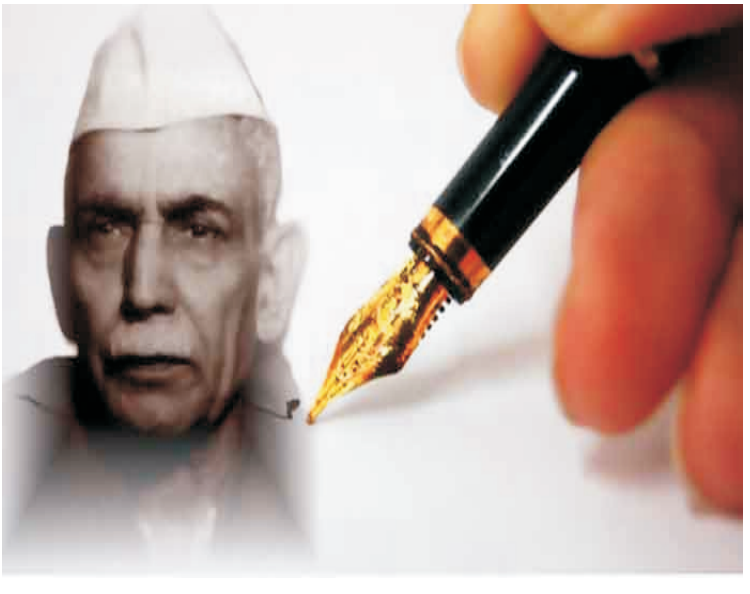

बिभ्रंति"[2] इस प्रकार 'राष्ट्र' की संकल्पना वर्तमान न होकर प्राचीन है जिसके अंतर्गत भूमि, उसकी सूरक्षा, संपन्नता के लिए आवश्यक राजा एवं प्रजा की जिम्मेदारियों का विस्तृत विवेचन मिलता हैं।

मानव चेतना अन्य प्राणियों से नितांत भिन्न और उत्कृष्ठ है। चेतना बोध–प्राप्ति की प्रक्रिया हैं। पशु–जगत इंद्रियजन्य चेतना तक सीमित होता हैं, किन्तु मानवीय चेतना संकल्प और सक्रियता से प्रेरित और प्रयत्नशील हैं। मानवीय चेतना अपने परिवेश में विचार और आचार द्वारा सामंजस्य तथा समन्वय की स्थापना कर समग्रता की दिशा में अग्रसर रहती है।

'राष्ट्र' पुरूषवाचक संज्ञा 'राष्ट्रीय' विशेषण में बदलती है तब राष्ट्रीय विशेषण को पुनः संज्ञा रूप दिया जाय तो वह स्त्रीवाचक 'राष्ट्रीयता' शब्द बनता है जिसका अर्थ होता है – "किसी राष्ट्र के विकास गुण, अपने देश या राष्ट्र का उत्कट प्रेम।"[3] इस प्रकार आधुनिक संदर्भो में 'राष्ट्र' एक व्यापक, बृहत और चेतनाशील संकल्पना हैं जिसमें निश्चित भूमि, निश्चित जनसंख्या, संस्कृति, सभ्यता, सार्वभौमत्व, इतिहास–परम्पराएँ, धर्म, दर्शन, अध्यात्म और साहित्य आदि में समानता अथवा समन्वय विविधता में एकात्मता की भावना आदि का महत्वपूर्ण स्थान हैं। राष्ट्र पहाड़, पत्थर, पेड–पौधों से संपृक्त भूमि और उसकी सीमा रेखाओं के अंदर खींचा गया मानचित्र नहीं रह जाता, वह एक शक्ति बन जाती है। चेतना से संपृक्त भावना बन जाती है जो मानवीय भाव–भावनाओं से संबद्ध होने के कारण परिभाषा से परे हो जाती हैं। माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में राष्ट्रीय चेतना कुट–कुटकर भरी हुई हैं।

माखनलाल चतुर्वेदी जी का जन्म 04 अप्रैल 1887 इस. ही अधिकतर विद्वान मानते है। उनका मूल घराना जयपूर की रियासत के 'राणीला' स्थान का हैं। उनके पिताजी नन्दलाल चतुर्वेदी तथा माता सुन्दरबाई दोनों दम्पति 'बाबई' नामक गाँव में आकर बसे। वहीं पर माखनलाल ने प्राथमिक शिक्षा ग्रहण की। उन्होंने टाउन स्कूल में माध्यमिक तथा जबलपूर से ही उन्होंने 'प्रायमरी टीचर्स ट्रेनिंग' की परीक्षा पास की जिसमें उन्हें हिंदी विषय में 94 प्रतिशत और गणित में 96 प्रतिशत अंक प्राप्त हुए थे।

माखनलाल चतुर्वेदी जी ने साहित्य की सृजन–शक्ति भरसक मात्रा में उपलब्ध हैं। उनके अंदर विकसित होनेवाली प्रतिभा को गणेश शंकर विद्यार्थी ने भली–भाँति पहचान लिया था। माखनलालजी मूक सृष्टा थे, साहित्य के अदृश्य विधाता की तरह। माखनलाल चतुर्वेदी प्रदर्शन–प्रवृत्ति के खिलाफ थे। प्रकाशन के प्रति इसी उदासीनता के कारण सन 1904 से साहित्य–सृजन करनेवाले इस कवि का कोई भी काव्य संग्रहित रूप में सन 1943 तक प्रकाशित नहीं हो पाया। उनके कुछ मित्रों, शिष्यों तथा आप्तजनों एवं आत्मीयजनों ने उनकी प्रगट प्रतिभा को प्रकाशित करने का संकल्प किया, जिसके परिणाम स्वरूप उनके आज कुल ग्यारह

काव्य–संग्रह सम्मुख आए हैं। जिसमें –

1) हिमकिरीटीनी (1943) 2) हिमतरंगिणी (1914–1945 के बिच)
3) माता 4) युगचरण (1956)
5) समर्पण (1956) 6) वेणुलो गूँजे धरा (1960)
7) आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि माखनलाल (1960)
8) आधुनिक कवि माखनलाल चतुर्वेदी (1960) 9) मरण ज्वार (1963)
10) बीजुरी काजल आँज रही (1964) 11) धूम्र वलय (1981)

माखनलाल चतुर्वेदी की समग्र कविताएँ राष्ट्रीयता से भरी हुई हैं। तत्कालीन युग में भारत देश पर अंग्रेजी सल्तनत थी। अंग्रेजों के जोखड़ों से भारत माता को आज़ाद करने के लिए चतुर्वेदीजी ने देशभक्तिपरक कविताएँ लिखी है, जो आज भी हमें प्रेरणा देती हैं। वर्तमान जनमानस में देशभक्ति की भावना निर्माण करने के लिए उनकी कविताएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

माखनलाल चतुर्वेदी की कविता में आत्मबल की भावना कुट–कुटकर भरी हुई हैं। उनकी राष्ट्रीय चेतना के मूल में अध्यात्मिक प्रभाव है। अध्यात्म का प्रारंभ ही आत्मा और उसकी पहचान से होता है, जो परमशक्ति की ओर जाने अथवा उसमें समर्पित होने के लिए आवश्यक हैं। अपनी संपूर्णावस्था में राष्ट्रीय चेतना अगर 'स्व' से 'परम्' तक की यात्रा है जिसके बीच परिवार, गाँव, जिला, प्रान्त, राज्य तथा राष्ट्र और विश्व आते हैं। तब आत्मशक्ति ही उसकी मूल प्रेरणा हैं। हमारी आत्मा हमें सचेत करने के लिए हमेशा प्रेरित करती हैं। चतुर्वेदी जी की आत्मा भी देशप्रेम के लिए उनमें चेतना निर्माण करती रही है। उन्होंने 'निश्चित' नामक अपनी कविता में कहा है –

"दो आज्ञा, आदर से पालू, तंग जगह में कर दो बन्द,
दुख और एकान्त–चिन्तना दोनों का लूटू आनंद,
वे हथकड़ियाँ मृदुल बेड़ियाँ, गनी कोट, कोडे स्वच्छंद
देने में तुमको बल देवे इन सबके हित करूणा–कन्द।"[4]

उपरोक्त पंक्तियों से चतुर्वेदी जी कहते हैं कि, अपने मन के विषाद को विश्वास एवं आत्मविश्वास में बदलने का प्रयास करना चाहिए, जिसके सहारे वह अंग्रेजों द्वारा लगाई जानेवाली बेड़ियों–हथकड़ियों का बोझ एवं एकान्त की यन्त्रणाओं को भी सहने की शक्ति निर्माण करता हैं। अतः माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय चेतना को मनुष्य के अंदर आत्मबल तथा आत्मगौरव की मजबूत बुनियाद पर निर्भर मानते हैं।

देशप्रेम की भावना को राष्ट्रीय चेतना का मूलाधार समझा जाता हैं। यही देशभक्ति की भावना स्थूल रूप से सूक्ष्म रूप धारण करती हैं। कवि ने अपना देशप्रेम भारत माता के प्रति व्यक्त करने के लिए भौगोलिकता का आधार लिया है। भौगोलिक सीमाओं में आबद्ध देश जड़भूमि नहीं रह जाता, मातृभूमि का स्वरूप ग्रहण कर देवत्व तक पहुँच जाता हैं। जब सामनेवाली कोई वस्तु देवत्व का रूप धारण करती है तब हमारी उस पर श्रद्धा जड़ जाती हैं। माखनलाल चतुर्वेदी को भी अपने देश के हिमालय पर्वत पर बड़ा गर्व हैं। वे उसे भारत माता को 'हिमकिरीटीनी' के रूप में देखते है और उसका मानवीकरण करते हुए लिखते है –

"जिसके सिर हिम का मुकुट लसित,
जिसके अंगो गंगा लिपटी,
हिमनग से अमल कुमारी तक,
शोभित मेरी यह पंचवटी।"[5]

अर्थात, कवि ने इस भूमि को अपनी माता मान लिया हैं। तब तो अपनी भू–माता के कन्धों पर शान से बैठे पर्वत, उसकी गोद में शीतल धाराओं के साथ कल–कल करती बहती सरिताएँ तथा भू–माता के चरण धोते सागरों का पवित्र जल आदि सब कवि की काव्यगत राष्ट्रीय चेतना को पुलकित करता हैं।

हिंदी कविताओं के माध्यम से समाज के जन–मानस में राष्ट्रीय चेता निर्माण करने का प्रयास हिंदी के विभिन्न कवियों द्वारा किया गया हैं। माखनलाल चतुर्वेदी अतीत गौरव की भावना के मूल में वर्तमान दुर्दशा की वेदना और संवेदना को मानते हैं। विगत वैभव की स्मृति से आत्मगौरव और वर्तमान दुर्दशा की वेदनाभिव्यक्ति से आत्मग्लानि का उचित समन्वय स्थापित किया हैं। तथा भविष्य की दिशा निश्चित की हैं। कवि माखनलालजी ने अंग्रेजों के जमाने में हमारे समाज में अंग्रेज धारजीन लोगों पर कड़ा प्रहार किया हैं। इन घातक प्रभुसत्तओं के द्वारा किये जा रहे अत्याचारों की ओर अंगुलिनिर्देश करते हुए,उनके जुल्मों की शिकार देश की जनता से कहा है –

"इस जग में जिन घातक प्रभुताओं ने, घर–घर आग लगाई,
मसिक वेतन पर बिक उनकी, पामरता हमने दुलराई।"[6]

तत्कालीन युगीन भारतीय चाटूकार लोगों ने अंग्रेजों को भारतीय भूप्रदेश की जानकारी देते रहे। जिस कारण भारत पर देडसौ वर्ष अंग्रेजों ने राज किया हैं। विदेशी साम्राज्यवादियों की घातक क्रूरताओं ने हमारी कायरता का किस प्रकार फायदा उठाया हैं, इसकी ओर हमारा लक्ष केंद्रित किया हैं। वर्तमान सियासी लोगों के संबंध भी मुझे दाऊद जैसं अंडर डॉन के साथ होते नज़र आते हैं। भारत देश को जिस दाऊद की आवश्यकता बरसों से हैं परंतु आज वहीं नहीं मिल रहा हैं। हमारे भारत में कुछ ऐसे सियासी लोग हैं, जो देश को खोकला बनाना चाहते हैं। इसलिए माखनलाल चतुर्वेदी जैसे राष्ट्रभक्त लोगों की कमी महसूस हो रहीं हैं।

अंग्रेजी सल्तनत से अपनी भारत–माता को आज़ाद करने के लिए हर भारतीयों ने अपने प्राण की आहुति देकर बलिदान, समर्पण दिया हैं। अत्याचारों से पीड़ित देश को मुक्त करने के लिए भगतसिंग, चंद्रशेखर अज़ाद, राजगुरू, सुखदेव जैसे शहिदों ने बलिदान दिया हैं। माखनलाल

चतुर्वेदी जी ने भी जिन्होंने बलिवेदी को अपनाया, राष्ट्र की स्वतंत्रता का इतिहास निर्माण किया उनके प्रति श्रद्धा एवं उपकार की भावाभिव्यक्ति मिलती है। कवि बलिदान और उसे अपनाने वाले बलिदानियों से बेहद प्रभावित होकर उनकी याद–याद पर अपनी तमाम यादें 'माता' नामक कविता में कुरबान करना चाहते हैं। जैसे–

"जिसके पागलपन में, प्रतिभा के सौं–सौं हाथी का बल है,
जिसके पागलपन में बलिपथ में भी मधुर ज्वार आता हैं,
अपने पागलपन में बेदी पर शिर जो उतार आता है।"[7]

हमारे देश की राष्ट्रीय एकता बरकरार रखने के लिए जातियता से देश को मुक्त करने की बात कवि माखनलाल चतुर्वेदी ने की हैं। वे राष्ट्रीय एकता और देश की अखंडता को परस्पर पूरक मानते हैं। कवि की कविताओं में जातिभेद, मजहब–संदप्रदाय से परे होकर एकता और अखंडता की भावना छिपी हुई हैं। अज़ादी के पूर्व देश में पनप रहीं जातीयता और प्रान्तीयता पर प्रहार करते हुए सन 1914 में लिखी अपनी 'चेतावनी' नामक कविता में उन्होंने कहा है –

"जातियता का भाव देखो, है यहाँ जगने लगा,
प्रान्तीयता का पाप इनको छोड़कर भागने लगा।"[8]

इस प्रकार माखनलाल चतुर्वेदी ने कभी नहीं चाहा कि भारत खण्डित हो। प्रारंभ से लेकर अन्त तक, स्वतंत्रता पूर्व से लेकर स्वातंत्र्योत्तर काल तक हमेशा वे भारत देश की एकता एवं अखण्डता की ही कामना करते रहे। स्वातंत्र्योत्तर भारत में देश की एकता और अखंडता के लिए हिंदू–मुस्लिम एकता और सामजस्य की सर्वाधिक आवश्यकता थी। उनके मतानुसार हिंदू–मुस्लिम एक ही है। मंदिर–मस्जिद का आपस में कहीं पर भी टकराव नहीं होना चाहिए, बल्कि सहयोग और सहिष्णुभाव होना चाहिए।

"मंदीर में था चाँद चमकता, मस्जिद में मुरली की तान।
मक्का हो चाहे वृंदावन, होते आपस में कुरबान।"[9]

इस प्रकार कवि चतुर्वेदी जी के काव्य में सांप्रदायिक विद्वेष का भाव कहीं पर भी अभिव्यक्त नहीं हुआ हैं। कवि माखनलाल चतुर्वेदी विदेशों के जोखडों से केवल अपने देश को ही मुक्त नहीं करना चाहते है, बल्कि वे विश्व के किसी भी देशों पर गुलामी लादने के ऐतराजी थे। कवि का आत्मगौरव राष्ट्रीय गौरव से होता हुआ विश्वगौरव की बुलन्दी तक पहुँचता हैं। सच्चे अर्थ में मानवता की भावना तक पहुँचने पर ही राष्ट्रीय चेतना संपूर्ण बनती हैं। कवि चतुर्वेदीजी की कविता में यह राष्ट्रीयता का स्वर वैश्विक स्तर का बन जाता हैं। अपने देश के समान विश्व के अन्य देशों की भी वे भलाई चाहते है –

"गिरे हुए राष्ट्रों को मेरा मत है शीघ्र उठाने को,
उनकी मुरझी हुई नसों में जीवनज्योति जगाने को,
ये ताते हो याद प्रथम – भारत हैं हृदय दुलारा देश,
मेरे मरने जीने का धन, प्यारा पूज्य हमारा देश।"[10]

उपसंहार :

इस प्रकार महाकवि तथा राष्ट्रकवि माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय चेतना का कवि रहा है। इनकी कविताओं में देशभक्ति, राष्ट्रीयता हर स्थान पर भरी हुई हैं। यह कवि 'स्व' से उपर उठकर सोचता हैं। कवि की राष्ट्रीय चेतना उनकी निजी चेतना का सामूहिक परंतु सुंदर आविष्कार है। आत्मबल से लेकर विश्वबंधुत्व तक का मनोबल से मानवता तक का वह एक काव्यमय लम्बा सफर है। जिसमें राष्ट्रप्रेम की राह पर चलते मसीहा नज़र आते हैं। ऐसे महान राष्ट्र कवि की वर्तमान परिवेश में भी लोगों में देशभक्ति की भावना का संचार करने के लिए आवश्यकता महसूस हो रही है। आज जो लोग स्वार्थ के घेरे में रहकर देशभक्ति को भूल रहे है उनके लिए माखनलाल चतुर्वेदी एक आदर्श के रूप में पढ़कर उनके कहे हुए मार्ग पर चलकर 'स्व' में परिवर्तन लाना होगा। तभी माखनलालजी के राष्ट्रीय चेतना की सार्थकता सिद्ध होगी। ऐसा मुझे प्रतित होता हैं।

संदर्भ सूचि :

1.अथर्ववेद – 12/1/8
2.शतपथ ब्राम्हण – 9/4/1/1
3.श्री नवलजी, नालन्दा विशाल शब्दसागर, पृ. 1177 से
4.डॉ. सुभाष महाले, 'माखनलाल चतुर्वेदी और वि. दा. सावरकर की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना', पृ. 190
5.माखनलाल चतुर्वेदी, 'बीजुरी काजल आज रही', पृ. 114
6.माखनलाल चतुर्वेदी, 'माता', पृ. 15
7.माखनलाल चतुर्वेदी, 'माता', पृ. 44
8.माखनलाल चतुर्वेदी, 'युगचरण', पृ. 20
9.माखनलाल चतुर्वेदी, 'समर्पण', पृ. 91
10.माखनलाल चतुर्वेदी, 'माता', पृ. 85

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- ✶ International Scientific Journal Consortium
- ✶ OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org